कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यानिलय, विजयपुर

हिन्दी अध्ययन विभाग

शोध विषय : **हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता संघर्ष : महिला उपन्यासकारों के संदर्भ में –(सन 2001- 2010 तक)**

Research Topic: Hindi Upanayaso me stree Asmitaa Sangarsh : Mahila Upnyaskaro ke Sandarabh me - (2001 se 2010 Tak)

शोध निर्देशिका : **डॉ श्रीमती .राजू. एस बागलकोट**

शोधार्थी : श्रीमती गीता. वि. निक्कम

शोध रूपरेखा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । समाज निरंतर परिवर्तनशील है । समय -समय के अनुसार समाज में परिवर्तन देखा जाता है। बदलते समाज के साथ उस समाज की संस्कृति परंपरा तथा साहित्य बदलता है। साहित्य में समाज का प्रतिबिंब दिखाई देता है । हिन्दी साहित्य की अपनी एक प्राचीन परंपरा हुई है । विशेष रूप से गद्य में, उपन्यास, कहानी, निबंध,नाटक-एकांकी, संस्मरण, यात्रावृत्त, आत्मकथा , रेखाचित्र , जीवनी , रिपोर्तजा आदि इक्कीसवी सदी आते-आते इन सभी विधाओं में उपन्यास विधा अत्यंत लोकप्रिय हुई है।

उपन्यास रचना में विशेष रूप से नारी ने अपना स्थान 1960 के बाद बनाया है। नारी आज किसी क्षेत्र में पीछे नहीं है। मैंने मृदुला गर्ग द्वारा रचित 'वसुका कुटुम' में सं-सामयिक समस्याएं शीर्षक से एम. फिल., की उपाधि प्राप्त की है । पीएचडी के लिए आवेदन किया तो मन में स्त्री संघर्ष पर ही शोध कार्य हेतु मन बना लिया । मैं भी एक स्त्री हूँ स्त्री की समस्या एवं संघर्ष को अच्छी तरह जानती हूँ ।

मैंने शोध हेतु "हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता संघर्ष : महिला उपन्यासकारों के संदर्भ में-(सन 2001- 2010 तक) विषय अपने मार्गदर्शिका के सहयोग से तय किया है । शोध कार्य आगे बढ़ाने हेतु इक्कीसवी सदी महिला उपन्यासकरों के उपन्यासों को चयन किया है। उनमें से 'अनामिका' –'दस डोर का पिंजरा', 'तिनका तिनके पास', 'अलका सरगावती' का –'शेष कादंबरी', 'ममता कालिया' –'दुक्खम- सुक्खम', 'मधू काँकरिया'-'सेजपर संस्कृत्', 'रजनी गुप्ता' –'एक न एक दिन',

'सुधा अरोड़ा' का –'यहीं कहीं था घर', 'शरद सिंह' का- 'पिछले पन्नों की औरत', उपन्यासकारों ने स्त्री की पीड़ा को भोगा है। बहुत ही नजदीक से निहारा है। स्त्री युगों-युगों से संघर्ष रत है। स्वातंत्र्य अस्तित्व बचाने के लिए निरन्तर संघर्ष रत है। इक्कीसवी सदी महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

मैंने मेरे शोध विषय "हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता संघर्ष: महिला उपन्यासकारों के संदर्भ में- (सन 2001- 2010 तक) शोध कार्य हेतु पँचम अध्यायों में बाटा है।

प्रथम अध्याय :

इस अध्याय में सन 2001 से 2010 तक के महिला उपन्यासकार एवं उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा।

द्वितीय अध्याय :

अस्मिता का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप को स्पष्ट किया जाएगा।

तृतीय अध्याय :

स्त्री की विविध समस्याओं को चित्रित किया जाएगा

चतुर्थ अध्याय :

इक्कीसवी सदी के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याओं तथा अस्मिता के संघर्ष को चित्रित किया जाएगा।

पँचम अध्याय :

इक्कीस्वी सदी के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों के कथा वस्तु को प्रस्तुत किया जाएगा।

उपसंहार

निष्कर्ष के रूप में शोध कार्य के निचोड़ को प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध निर्देशिका	**शोधार्थी**
डॉ श्रीमती राजू एस बागलकोट	श्री मती गीता. वि. निक्कम